© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 11 Issue: 03 | July - September 2020
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in

बहुभाषिकता का अभिप्राय , चिंतन एवं भारतीय शिक्षा में स्थान

डॉ अमित कुमार जायसवाल
एसोसियेट प्रोफेसर (बी. एड. विभाग)
गवर्नमेंट पीजी कालेज, कोटद्वार , उत्तराखंड
ई-मेल –jaiswalamit1318@gmail.com -

सारांशिका

अगर किसी बच्चे के घर पर कुमायूनी बोली जाती है। स्कूल में होने वाली पढ़ाई इंग्लिश और हिंदी में होती है तो बच्चे के लिए स्कूल में समायोजन करना काफी मुश्किल होगा अगर उसको अपनी भाषा में बोलने का मौका नहीं दिया जाएगा। उदाहरण के लिए अगर किसी बच्चे के घर में गुजराती, मराठी, बँगला या हिंदी बोली जाती है और स्कूल में पढ़ाई का माध्यम अंग्रेज़ी है तो ऐसे में बच्चा एक से अधिक भाषाओं के संपर्क में आता है। धीरे-धीरे उसमें कुशलता का एक स्तर हासिल करता है। एक से अधिक भाषाओं के प्रति सम्मान का भाव और मूलतः एक से अधिक भाषाओं के इस्तेमाल के विचार को स्वीकार करना और उसे रोजमर्रा के जीवन में स्थान देना ही, सही मायने में बहुभाषिकता है। प्रस्तुत आलेख में बहुभाषिकता का अभिप्राय , चिंतन एवं भारतीय शिक्षा में स्थान की विवेचना करने का प्रारम्भिक यत्न किया गया है |

मुख्य शब्द : बहुभाषिकता, मातृभाषा, द्विभाषिकता, संसाधन

बहुभाषिकता का सन्दर्भ क्या है?

यह एक आम अनुभव है कि स्कूल में बच्चों की भाषाओं की अनदेखी होती है। आम तौर पर यही मान लिया जाता है कि शिक्षा कार्य उस इलाके की प्रभुत्वशाली भाषा या राज्य की राजकीय (आधिकारिक) भाषा के ज़रिए ही किया जाना चाहिए। बच्चों की बहु-विविध भाषाओं को चुप करा दिया जाता है और अधिकतर समय वे यह समझ ही नहीं पाते कि कक्षा में चल क्या रहा है। ऐसी परिस्थिति के नतीजे क्या होंगे, यह तो हमें पता ही होना चाहिए और ये सब हमारे सामने भी हाज़िर हैं। उदाहरण के तौर पर राजस्थान के आदिवासी अंचल में 'साक्षरता' पर आयोजित एक समारोह में बच्चों से स्कूल की लायब्रेरी और किताबों से दोस्ती करने के बारे में बात हो रही थी। इसी बातचीत के दौरान घर के लोगों को कहानी पढ़कर सुनाने का भी जिक्र हो आया। एक लड़की ने सवाल किया, "घर के लोगों को कहानी कैसे सुनाएं? अगर उनको अपनी किताब से कहानी पढ़कर सुनाते हैं तो कहानी उनको समझ में नहीं आती?" यह आज के दिन का सबसे अच्छा सवाल था।

आखिर में हम कह सकते हैं, "हम सभी मूलतः बहुभाषी हैं। किसी एक भाषा से हमारा काम चल ही नहीं सकता है। हम स्कूल में एक भाषा बोलते हैं, घर पर दूसरी भाषा बोलते हैं, दोस्तों के साथ किसी अन्य भाषा में संवाद करते हैं। इसके अतिरिक्त बहुत सी अन्य भाषाओं में हम बोलते कम हैं। मगर उसमें लिखने-पढ़ने का काम करते हैं

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 11 Issue: 03 | July - September 2020
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in

जैसे अंग्रेजी। बहुत से हिंदी-भाषी राज्यों में अंग्रेजी में संवाद करने की जरूरत आमतौर पर नहीं पड़ती। मगर वहां के लोग अंग्रेजी के अखबार, पत्रिकाएं, उपन्यास और कहानियां इत्यादि पढ़ते हैं।बहुभाषी का अर्थ ऐसे व्यक्ति से है जो दो या अधिक भाषाओं का प्रयोग करता है। विश्व में बहुभाषी लोगों की संख्या एकभाषियों की तुलना में बहुत अधिक है। विद्वानों का मत है कि द्विभाषिकता किसी भी व्यक्ति के ज्ञान एवं व्यक्तित्व के विकास के लिये बहुत उपयोगी है।

होर्गेन के अनुसार, "दो भाषाओं के ज्ञान की स्थिति द्विभाषिक है।" वैसे तो बहुत सी भाषाओं को जानने वाले को बहुभाषिक कहते हैं परंतु एक से अधिक भाषा (केवल दो) जानने वाले को द्विभाषिक के साथ-साथ बहुभाषिक भी कहते हैं।

ब्लूम फील्ड के अनुसार – "बहुभाषिकता की स्थिति तब पैदा होती है जब व्यक्ति किसी ऐसे समाज में रहता है जो उसकी मातृभाषा से अलग भाषा बोलता है और उस समाज में रहते हुए वह उस अन्य भाषा में इतना पारंगत हो जाता है कि उस भाषा का प्रयोग मातृभाषा की तरह कर सकता है।"

कुछ विद्वानों ने इसे इस रूप में प्रस्तुत किया कि द्विभाषिकता या बहुभाषिकता व्यक्ति के बचपन से ही दो या बहुत भाषाएँ एक साथ सीखकर उसका समान रूप और सहज प्रभाव से प्रयोग करने की स्थिति को कहते हैं परन्तु भाषावैज्ञानिक इसे अस्वीकार करते हुए तर्क देते हैं कि दो भाषाओं में मातृभाषा जैसी क्षमता एक ऐसा आदर्श है जिसे प्राप्त करना बहुत कठिन है। इस प्रकार एक से अधिक भाषाओं की जानकारी एवं प्रयोग बहुभाषिकता की स्थिति है।भारत में बहुभाषिकता को एक संसाधन के रूप में देखने की बजाय एक समस्या की तरह देखा जाता है। इसके लिए हम उन स्कूलों का उदाहरण ले सकते हैं जहां क्लासरूम में एक बच्चे को अपनी मातृभाषा का इस्तेमाल करने से रोका जाता है।

भारत में बहुभाषिकता की स्थिति नयी नहीं है। जब आप कहते हैं कि चार कोस पर पानी बदले और आठ कोस पर बानी तो इसका मतलब है कि आठ कोस की दूरी पर रहने वाले व्यक्ति के साथ बात करते हुए लोग उसकी पूरी बात नहीं समझ पाएंगे। तो लोग आपस में कैसे संवाद कर पाएंगे? परंतु आठ कोस के निकट वाले क्षेत्रों में रहने वाले लोग दोनों बोलिओं में संवाद करने की क्षमता रखते हैं। इसी प्रकार दो भिन्न भाषाओं के क्षेत्रों में निवास करने वाली जनता भी सीमा क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों के सहारे पर प्रदेश के लोगों के साथ संवाद कर सकते हैं। यदि इस सिद्धांत को और विस्तृत किया जाए तो दो देशों की जनता भी सीमा क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों के सहारे उस देश के लोगों के साथ संवाद कर सकते हैं। इस प्रकार द्विभाषिकता की स्थिति का निर्माण हुआ। अतः सीमा क्षेत्र में, चाहे प्रदेश का हो या देश का, निवास करने वाले लोग स्वभावतः द्विभाषी होते हैं, जैसे, नेपाल की सीमा के साथ रहने वाले अपनी मातृभाषा के साथ नेपाली भाषा, चीन और रूस की सीमा के साथ रहने वाले लोग चीनी और रूसी दोनों भाषाओं में संवाद करने की क्षमता रखते हैं।

यह स्थिति तो सामान्य परिस्थितियों में और स्वाभाविक रूप से बरकरार रहती आई है। यह द्विभाषिकता की स्थिति आज देश प्रदेश के सीमा क्षेत्र तक ही महदूद नहीं रह गई है। अब सीमा क्षेत्र से परे रहने वाले लोग भी अपने आप देश प्रदेश की भाषा सीखने लगे हैं और इसे अतिरिक्त योग्यता माने जाने लगी है। आज हिंदुस्तान का हर

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 11 Issue: 03 | July - September 2020
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in

सुशिक्षित व्यक्ति द्विभाषी है, अपनी मातृभाषा के अलावा हिंदी और अंग्रेज़ी सीखता है। कई लोग बहुभाषी हो रहे हैं। इसी प्रकार विश्व के अन्य देशों में रहने वाले भी अपने देश की राजभाषा के अलावा फ्रेंच, स्पैनिश, जर्मन, लैटिन और चीनी, कोरियाई आदि भाषाएं सीख रहे हैं। चीन और जापान के लोग अंग्रेज़ी और अन्य यूरोपीय भाषाएं एवं हिंदी सीख रहे हैं। ब्रिटेन के लोग अपने बच्चों की शिक्षा के लिए बहुभाषी शिक्षकों की तलाश में विज्ञापन दे रहे हैं। अतः आज द्विभाषिकता या बहुभाषिकता एक ज़रूरत बन गई है। आज यदि कोई व्यक्ति कोई विदेशी भाषा नहीं जानता है तो उसे शिक्षित नहीं माना जाता है। आज द्विभाषिकता या बहुभाषिकता शौक नहीं ज़रूरत बन गई है।अपने सांस्कृतिक, व्यापारिक एवं सामाजिक कारणों के फलस्वरूप यहाँ बहुभाषिकता बहुत पहले से मौजूद है। भारत की संस्कृति इतनी समृद्ध है कि लोग यहाँ कहते हैं, ''कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बदले बानी।'' तकनीकी के प्रभाव के कारण शिक्षा की व्यापकता, महानगरों के उदय एवं संचार माध्यमों का विकास हो रहा है जिस कारण अधिकाधिक व्यक्ति द्विभाषी या बहुभाषी होने की स्थिति को प्राप्त कर रहे हैं। भारत इन सबसे अछूता नहीं है। बहुभाषा-भाषी राष्ट्र होने के कारण यहाँ यह स्थिति पहले से ही थी परन्तु इन सबने इसके इस स्थिति को और समृद्ध किया है।

बहुभाषिकता : एक अद्भुत समाधान

इसके बाद बच्चों से पढ़ना सीखने में भाषा कालांश में नियमित पढ़ाई वाले मुद्दे पर बात हुई। अधिकांश बच्चों का मानना था कि अगर पहली-दूसरी कक्षा तक आते-आते बच्चे समझकर पढ़ना सीख जाएं तो आगे की कक्षाओं में उनको विशेष दिक्कत नहीं होगी।इसके साथ-साथ स्कूल के बच्चों को पढ़ना सिखाने में मदद करने की बात भी हुई जो पढ़ाई के मामले में पीछे हैं। या जिनको किताब पढ़ने में परेशानी का सामना करना पड़ता है। ताकि बच्चों में एक-दूसरे से सीखने की भावना (पियर लर्निंग) का विकास हो सके।

पुस्तकालय की जिम्मेदारी संभालने वाले शिक्षक ने कहा कि अध्यापकों की कमी से जूझ रहे विद्यालय में पहली-दूसरी कक्षा पर ध्यान देना संभव नहीं हो पा रहा है। मगर हमारी कोशिश होगी कि हम बच्चों को रोज़ाना लायब्रेरी में जाने का मौका दें क्योंकि बच्चों की किताबों में काफी रुचि है।

स्कूल के किताबें पढ़ना चाहते हैं। किताबों को घर ले जाना चाहते हैं। उनकी इस रुचि को ध्यान में रखते हुए पुस्तकालय का ज्यादा प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल करने की कोशिश होगी। उनकी इस बात से लगा कि भाषा सीखने में पुस्तकालय के महत्व को वे समझ पा रहे हैं। पठन कौशल का विकास पढ़ने से होगा और बच्चे अगर निरंतर किताबें पढ़ते रहें तो उनका पठन कौशल स्वतः उन्नत होता चला जाता है। यह बात भाषा पर काम करने के दौरान पुस्तकालय का ज्यादा इस्तेमाल करने वाले बच्चों के संदर्भ में काफी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। निःसंदेह इसमें बच्चे के व्यक्तिगत रुचि की भी काफी महत्वपूर्ण भूमिका है।

उपरोक्त नजरिये से देखें तो हम कह सकते हैं कि बहुभाषिकता एक समाधान है। इससे हम किसी मुद्दे पर अलग-अलग दृष्टिकोण से विचार कर पाते हैं। एक ऐसे समाधान तक पहुंचने का प्रयास कर पाते हैं जो अन्य लोगों के प्रति भी समान रूप से संवेदनशील होता है। किसी एक भाषा को सभी लोगों के ऊपर थोपने की कोशिशों का इसी कारण

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 11 Issue: 03 | July - September 2020
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in

से विरोध होता है क्योंकि जो भाषा किसी के लिए आसान होती है। वही अन्य लोगों के लिए मुश्किल हो सकती है, यह एक छोटी सी बात है। मगर हम इसे समझने की कोशिश नहीं करते।

बहुभाषिकता से लाभ:

बहुभाषी होने के लाभों के बारे में बात करते समय, अधिकांश लोग बुनियादी लाभों के बारे में सोचते हैं – अन्य स्थानों पर जाने के दौरान मिलने वाली सुविधा और अन्य देशों में स्थानीय आबादी के साथ संवाद करने के लाभ। हालाँकि, बहुभाषी होने के लाभ कहीं अधिक हैं। बहुभाषावाद के कई सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और करियर लाभ दिखाए गए हैं। इसके अलावा, हाल के अध्ययन कई स्वास्थ्य लाभ दिखाते हैं जो एक से अधिक भाषा बोलने से उत्पन्न होते हैं। इनमें स्ट्रोक के बाद तेजी से ठीक होना और स्मृति हानि रोगों की शुरुआत में देरी शामिल है।

बहुभाषी होने के कुछ लाभों की सूची यहां दी गई है:

1. **संचार कौशल बढ़ाएँ:** यह एक दिया हुआ तथ्य है – जितनी अधिक भाषाएँ आप जानते हैं, लोगों से बात करना आसान हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप आपके संचार कौशल में सुधार होता है। आप वास्तव में भाषा बोलकर कई देशों में घूम सकते हैं और स्थानीय की तरह जगह का अनुभव कर सकते हैं।
2. **बढ़ी हुई भाषाई पहचान:** कई भाषाओं को जानने से आपका रिज्यूमे सबसे अलग दिखता है और नौकरी के बाजार में आपकी प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार हो सकता है।
3. **सुपीरियर एक्जीक्यूटिव फंक्शनिंग:** कई अध्ययनों से पता चलता है कि जो लोग दूसरी या तीसरी भाषा बोलते हैं, उनके कम विचलित होने और कार्यों पर अधिक ध्यान केंद्रित करने की संभावना अधिक होती है।
4. **अपने परिवेश से अभ्यस्त:** बहुभाषी होने के संज्ञानात्मक लाभ बच्चों और वयस्कों दोनों को प्रभावित करते हैं। सात महीने से कम उम्र के बच्चे जो एक से अधिक भाषाओं के संपर्क में आते हैं, वे पर्यावरणीय परिवर्तनों के साथ बेहतर तालमेल बिठाते हैं।
5. **कैरियर के बढ़े हुए अवसर:** कई भाषाएं बोलने से रोजगार के अनेक लाभ होते हैं। बहुभाषी होने का मतलब है कि आपके द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं के आधार पर नौकरी के अधिक अवसर हैं। कई कंपनियां, विशेष रूप से जिनके कार्यालय विभिन्न देशों में हैं, अब बहुभाषावाद को एक उच्च प्राथमिकता मान रही हैं।
6. **अल्जाइमर / डिमेंशिया की शुरुआत में देरी:** बहुभाषी होने से मस्तिष्क पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
7. **कुशल मल्टी-टास्किंग:** चूंकि बहुभाषी लोग आसानी से विभिन्न भाषाओं के बीच स्विच कर सकते हैं, इसलिए वे मल्टी-टास्किंग में भी अच्छे हैं।
8. **याददाश्त में सुधार:** अध्ययनों से पता चला है कि जो लोग कई भाषाएं बोलते हैं उनका ध्यान बेहतर होता है जिसका व्यक्ति के स्मृति कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
9. **एकाधिक भाषाएँ दृष्टिकोण को बढ़ाती हैं:** बहुभाषी होने का एक लाभ यह है कि आप दुनिया को अलग-अलग तरीकों से देख सकते हैं। यह आमतौर पर उन्हें नई चीजों और नए अनुभवों के प्रति अधिक खुले विचारों वाला बनाता है।

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 11 Issue: 03 | July - September 2020
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in

10. **अतिरिक्त भाषाएँ सीखने की क्षमता को बढ़ाता है:** बहुभाषी होने का एक बड़ा लाभ यह है कि आप मोनोलिंगुअल की तुलना में नई अतिरिक्त भाषाएँ अधिक आसानी से सीख सकते हैं। यह मुख्य रूप से इसलिए है क्योंकि भाषा कौशल एक दूसरे को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए यदि आपके पास पहले से ही दूसरी भाषा है, तो तीसरी भाषा सीखने का सीधा सा अर्थ है उन कौशलों को स्थानांतरित करना।

अतः बहुभाषिकता से अन्य लाभ भी हैं जो इस प्रकार है –

I. अधिक संवाद कौशल
II. उच्च भाषाई बोध
III. उत्कृष्ट प्रबंधकारी कार्य पद्धति
IV. अपने परिवेश के अनुरूप ढलना
V. अधिक करियर अवसर
VI. अल्ज़ाइमर / स्मृतिलोप के आरंभ में देर होना
VII. कुशल बहुकार्यात्मकता
VIII. स्मृति में सुधार
IX. अतिरिक्त भाषायें सीखने की बढ़ी हुई क्षमता

कक्षा में भाषा अनुवाद

'भाषा अनुवाद' तुलनात्मक रूप से पुराने अभ्यास के लिए एक नया शब्द है – जिसमें ऐसी भाषाओं को, जिनके बारे में किसी को जानकारी हो, दूसरी भाषा में बदला जाता है, ताकि संचार की क्षमता को बढ़ाया जा सके। भाषा अनुवाद एक लचीला बहुभाषावाद है। एक ही उच्चारण में चाहे इसमें भिन्न-भिन्न भाषाओं के संयोजन तत्व शामिल हों या नहीं ('कोड-स्विचिंग') अथवा किसी कार्य के भिन्न-भिन्न हिस्सों में भाषाओं के बीच अदला-बदली करना, यह किसी व्यक्ति के भाषायी संसाधनों को उनके सर्वोत्तम प्रभाव के साथ नियोजित करने का एक प्राकृतिक माध्यम है। यह इसलिए उत्पन्न होता है, क्योंकि व्यक्ति किसी कथित भाषा को किसी विशिष्ट कार्य, विषय या परिस्थिति से संबद्ध कर देते हैं या क्योंकि कुछ अवधारणाएँ (जैसे कि 'इंटरनेट') सामान्यतः किसी भाषा विशेष में अधिक व्यक्त की जाने वाली समझी जाती हैं क्योंकि यह मनोरंजक और मजाकिया हो सकता है। भाषा अनुवाद ऐसी चीज़ है जिसका उपयोग अधिकांश लोग, इसके बारे में कुछ सोचे बिना, अपने मित्रों, परिवार और समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ हर समय करते रहते हैं।

I. कक्षा में, भाषा अनुवाद में निम्न शामिल हो सकते हैं:
II. भाषाओं के बीच अनुवाद करना
III. भिन्न-भिन्न भाषाओं के साथ तुलना करना और आनंदित बने रहना
IV. बोले और लिखे जाने वाले समान उच्चारण में भिन्न-भिन्न भाषाओं से शब्दों और अभिव्यक्तियों को मिलाना।

V. किसी गतिविधि के एक हिस्से में मातृभाषा का उपयोग करना और दूसरे हिस्से में स्कूल की भाषा का उपयोग करना।

VI. इस प्रकार, विद्यार्थी जानकारी को एक भाषा में सुन सकते हैं और उसके भावार्थ को दूसरी भाषा में मौखिक रूप से समझा सकते हैं या उसके लिखित नोट बना सकते हैं। इसी प्रकार वे एक भाषा में कोई पाठ्य पढ़ सकते हैं और दूसरी भाषा में उसके बारे में बात कर सकते हैं या लिखित रूप में उसका सारांश कर सकते हैं।

VII. शिक्षकों और विद्यार्थियों, दोनों के लिए एक संसाधन के रूप में भाषा अनुवाद के कई शैक्षणिक लाभ हैं, क्योंकि यहः

VIII. बहुभाषावाद उसे किसी समस्या की बजाय एक मूल्यवान संपत्ति के रूप में देखने हेतु या आरंभिक अध्यापन के समय एक अस्थायी सहभागिता वाले उपकरण को मान्य बनाता है

IX. केवल एक भाषा में संभावित तकनीक की तुलना में एक अधिक कुशल और प्रभावी अध्यापन और शिक्षण तकनीक प्रस्तुत करता है

X. स्कूल के अंदर और बाहर उपयोग हेतु व्यापक और विविध संचारात्मक रंगपटल विकसित करने के लिए, व्यक्तियों को अवसर प्रदान करता है।

बहुत से स्कूलों में बच्चों के हिंदी बोलने पर अभिभावक से शिकायत की जाती है। फाइन लगाया जाता है। इसी तरीके से अन्य भाषाओं के साथ भी भेदभाव होता है। जिसका व्यावहारिक समाधान तलाशने की दिशा में प्रयास होना चाहिए। बहुभाषिकता इस समस्या का एक समाधान है। क्योंकि भाषा का मकसद केवल सामने वाली की जरूरत के अनुसार खुद को ढालना नहीं है। भाषा अपने अनुभवों पर विचार करने, भविष्य के फैसले लेने और लोगों से विचार-विमर्श करने का एक सशक्त जरिया है। बहुभाषिकता इस प्रक्रिया को ज्यादा सुगम और विविध बनाती है। इसे एक व्यापकता देती है जो बाकी लोगों को भी संवाद की प्रक्रिया में भागीदार बनाने की हिमायत करती है, उनका विरोध नहीं करती।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

I. Agnihotri, R.K. (2007) 'Towards a pedagogical paradigm rooted in multilinguality', International Multilingual Research Journal, no. 1, pp. 1–10.

II. Agnihotri, R.K. (2009) 'Multilinguality and a new world order' in Mohanty, A.K., Panda, M., Phillipson, R. and Skutnabb-Kangas, T. (eds) Multilingual Education for Social Justice: Globalizing the Local. New Delhi: Orient BlackSwan.

III. Agnihotri, R.K. (2014) 'Multilinguality, education and harmony', International Journal of Multilingualism, vol. 11, no. 3, pp. 364–79.

IV. Celic, C. and Seltzer, K. (2011) Translanguaging: A CUNY-NYSIEB Guide for Educators. New York, NY: The Graduate Center.

V. Canagarajah, A.S. (ed.) (2013) Literacy as Translingual Practice: Between Communities and Classrooms. New York, NY: Routledge.

VI. National Council of Educational Research and Training (undated) 'National focus group on problems of scheduled caste and scheduled tribe children' (online) NCF 2005 position paper. Available from: http://www.ncert.nic.in/ html/ pdf/ schoolcurriculum/ position_papers/ position_paper_on_sc&st.pdf (accessed 18 November 2014).

VII. National Council of Educational Research and Training (2006) 'National focus group on teaching of Indian languages' (online) NCF 2005 position paper. Available from: http://www.ncert.nic.in/ html/ pdf/ schoolcurriculum/ Position_Papers/ Indian_Languages.pdf (accessed 18 November 2014).

VIII. Neaum, S. (2012) Language and Literacy for the Early Years. London: Sage.

IX. Simpson, J. (2014) 'Empowering teachers by helping legitimise translanguaging practices in Rwandan classrooms', British Association of International and Comparative Education 2014 Conference, 8–10 September, University of Bath.